RNI No. MAHHIN/2015/65212 https://shreedeshna.page shreedeshna77@gmail.com

मासिक पत्रिका

श्री देशना

वर्ष 7 अंक 8

सांस्कृतिक चेतना की संवाहिका...

शुल्क 20/-

प्रधान संपादिका : डॉ. नीलम जैन 8999399481 संपादिका : डॉ. ममता जैन 8668734864

संपादकीय कार्यालय : एच – 210 डैफोडिल्स, मगरपट्टा, पुणे - 411018 (महाराष्ट्र) फोन : 8788282022

संपादक की कलम से

एक चैतन्य दिव्य शक्ति से साक्षात्कार

- डॉ. नीलम जैन

कुंडलपुर में बड़े बाबा के पंचकल्याणक के दिव्य महोत्सव का प्रारंभ छोटे बाबा के केवल 7 दिन पूर्व घोषित दिव्य घोषणा के साथ 12 जनवरी को प्रारंभ हुआ कोरोना के त्राहिमाम पर घोषणा के साथ ही सर्वत्र विराम लग गयाऔर विश्व के मंगल की कल्याणी भावधारा ने सर्वत्र संपूर्ण भूमंडल में उल्लास आनंद उत्साह का क्षीरसागर भर दिया उर्ध्वारोही चेतना के द्युलोक में उत्सव पर ध्वजारोहण ने पूर्व दिशा में ध्वजा फहराकर शुभसंकेत दिए–

प्रकृति के प्रत्येक तंतु ने संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी के चरणों से स्वयं को जोड़ा और आचार्य श्री जुड़े हुए थे ही बड़े बाबा से 10 लाख लोगों के जन समूह ने यथाशक्ति नहीं शक्ति से भी बढ़कर तन मन धन समर्पण कर दिया पता नहीं आचार्य श्री के तेज से संस्पर्शित अलौकिक रश्मियों को स्पर्श करती मलयानिल ने कौन सी प्रभाती गाई गंधर्व वाणी बजाई कि जाग गया संसार और मंदिर पर रवि की प्रथम किरण ने तिलक कर दिया असंख्य ज्योति कलश छलके बड़े-बड़े हिमालय खिसक खिसक कर कुंडलपुर चले आए धरती पर करुणा की फेनिल दुग्ध धवल ने कण-कण को रसाद्र बना दिया समशीतोष्ण वातावरण हो गया।

श्री गुरु पद नख मणि गण ज्योति।
सुमिरत दिव्य दृष्टि हिय होती ।।

पत्र पत्र पुष्प पुष्प पर बैठा भक्ति भाव हृदय की भाव सरणियों से संवलित और संचारित हो रहा था। भारतवर्ष आज श्रमण संस्कृति की महिमा का नव पृष्ठ नव इतिहास रच रहा था छोटी सी पहाड़ी कुंडलाकार देवालयों सहित इस सृष्टि का उत्सव गान कर रही थी आँखें भी मन के साथ वैराग्य की अनिर्वचनीय शीतलता में मग्न थी उच्च शिक्षित युवकों की दीक्षा कुमारिकाओं का संयम प्रवेश अद्भुत वैराग्य सम्मोहन मन को वैरागी बनाता रहा।

पूज्य आचार्य श्री ने कहा था इस उत्सव में देवगण भी आएंगे सचमुच वे आए। सर्वत्र लाखों लोगों में सभी का प्रसन्न निरोग निरापद रहना किसी अदृश्य शक्ति का ही चमत्कार अनुभव करा रहा था। किसी स्थान पर पड़ा था -

नाहं वसामि वैकुंठे योगिनां हृदये न च।
मद् भक्ता यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारदः ।।

हे नारद! ना तो मैं बैकुंठ में रहता हूं और ना योगियों के हृदय में मेरे भक्त जहां गान करते हैं मेरा भजन करते हैं वही मैं निवास करता हूँ।

सत्यतः 12 दिन तक लगातार मानो भक्ति ही देह धारण कर कई कई स्वरूपों में साकार हो उठी आनंद भाव की भजनमाला से कंठ चमक रहे थे सभी अवनी अंबर एक हो उठे। गुरु कृपा सिंधु में सभी स्नान कर रहे थे आत्मबलज्योति से उद्घाटित विश्व का अद्भुत विराट पंचकल्याणक महोत्सव नभस्पर्शी उत्तुंग प्रभावना के साथ सम्पन्न हुआ बड़े बाबा छोटे बाबा की कृपा यूं ही सब पर बनी रहे - नमन

कुण्डलपुर में ऐतिहासिक पंचकल्याण महामहोत्सव सम्पन्न

कुण्डलपुर (दमोह) म.प्र. के सबसे पवित्र दिगम्बर जैन तीर्थ कुण्डलपुर में रविवार को उस समय नया इतिहास रच गया, जब 18 युवा ब्रह्मचारियों ने आचार्य श्री से क्षुल्लक दीक्षा लेकर घर का त्याग कर दिया। 176 युवतियों ने भी भगवान आदिनाथ की पुत्री ब्राह्मी और सुन्दरी बनकर आचार्य श्री से अजीवन ब्रह्मचर्य व्रत लेकर संयम के मार्ग पर चलने का संकल्प लिया। आचार्य श्री ने अपने छह शिष्यों को निर्यापक मुनि बनाकर उनके पृथक संघ बनाने की घोषणा भी की। महोत्सव में तप कल्याणक के दिन दो लाख से अधिक लोग पहुंचे।

धार्मिक अनुष्ठान, आदिकुमार को हुआ वैराग्य, आचार्य श्री ने दी दीक्षा

पंचकल्याणक महोत्सव में प्रतिदिन सुबह 6 बजे से ही प्रतिष्ठाचार्य विनय भैया के निर्देशन में धार्मिक अनुष्ठान सम्पन्न हुए। सुबह अभिषेक, शांतिधारा, नित्य पूजन, आचार्य श्री की पूजन हुई, रात्रि में भव्य सांस्कृतिक हुए। आचार्य श्री ने प्रथम दिन ही कह दिया था कि यहाँ देव अपनी विक्रिया ऋद्धि से ऐसी व्यवस्था करेंगे कि महोत्सव में सभी लोग समां जाएंगे।

छह निर्यापक मुनियों की घोषणा

आचार्य श्री ने छह मुनियों श्री समतासागर जी महाराज, श्री प्रशांतसागर जी महाराज, श्री प्रसादसागर जी महाराज, श्री अभयसागर जी महाराज, श्री संभवसागर जी महाराज, श्री वीरसागर जी महाराज को निर्यापक मुनि बनाते हुए इनके पृथक संघ बनाते हुए कहा कि यह सभी मुनि महाराज अपने अपने संघ का ठीक से संचालन करेंगे।

18 क्षुल्लक दीक्षाएँ

आचार्य श्री ने 18 युवा ब्रह्मचारियों को क्षुल्लक दीक्षा दी। पहली बार आचार्यश्री ने दीक्षा के मंत्र पढे और निर्यापक मुनिश्री समयसागर जी महाराज, मुनिश्री योगसागर जी महाराज, मुनिश्री सुधासागर जी महाराज ने दीक्षा के संस्कार किये। क्षुल्लक दीक्षा लेने वालों में ब्रह्मचारी राहुल भैया सागर, राजेश भैया सागर, भूपेन्द्र भैया ललितपुर, सुमित भैया गुना, मयूर भैया विदिशा, ईश्वरदास भैया महाराजपुर, सचिन भैया मुंगावली, मानस भैया इंदौर, सचिन भैया पुसद महाराष्ट्र, प्रांसुल जैन सतना, अविचल भैया गुना, राजा भैया खिमलासा, अमित भैया ललितपुर, मयूर भैया सुर्खी, अर्पित भैया फिरोजाबाद, चंदन भैया फिरोजपुर पंजाब, कार्तिक भैया दमोह, सौरभ भैया सागर शामिल हैं। ये सभी उच्च शिक्षित हैं।

176 बालिकाओं ने लिया ब्रह्मचर्य व्रत

कुंडलपुर में आज उस समय इतिहास रच गया जब एक साथ 176 बालिकाओं ने आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज से अजीव ब्रह्मचर्य व्रत धारण कर मोक्ष मार्ग पर चलने का संकल्प लिया। यह सभी बहनें उच्च शिक्षा प्राप्त हैं। इनमें से कई बहनों को पास तीन तीन चार चार डिग्रियां भी हैं। आचार्यश्री से व्रत लेने के बाद अब यह बहनें आर्यिका श्री आदर्शमति माता जी के संघ में रहकर प्रतिभा स्थली में शिक्षण कार्य करेंगीं। संभवतः यह सैकड़ों वर्षो बाद सुनने में आया है कि एक दिन में इतनी बड़ी संख्या में बहनों ने ब्रह्मचर्य व्रत लिया हो।

धर्म एवं दर्शन

जीवन-मरण की कला सिखाई ऋषभदेव ने...

- आचार्य श्री अतिवीर सागर जी मुनिराज

जैनदर्शन के प्रथम तीर्थंकर देवाधिदेव श्री ऋषभदेव भगवान तीसरे काल के अंत में निर्वाण पद की प्राप्ति कर समस्त सांसारिक बंधनों से मुक्ति प्राप्त की| शाश्वत जन्मभूमि अयोध्या में राजा नाभिराय व माता मरुदेवी के आँगन में जन्म लेकर भगवान ऋषभदेव ने प्राणीमात्र का कल्याण किया| भारतवर्ष के स्वर्णिम इतिहास में जैन दर्शन का अमूल्य योगदान है| जब कल्पवृक्ष लुप्त होने लगे तो जनमानस को जीवनयापन की चिंता होने लगी| ऐसे समय में भगवान ऋषभदेव ने असि, मसि, कृषि, शिल्प, वाणिज्य व कला का अद्भुत ज्ञान प्रदान कर जीवन जीने की कला सिखाई| अपनी दोनों पुत्रियों, ब्राह्मी व सुंदरी, को अंक व लिपि का ज्ञान देकर महिला सशक्तिकरण का एहसास लोगों को करवाया| इसी कारण ब्राह्मी लिपि नामकरण हुआ| आपने न्याय व नीति पूर्वक राज्य कर समस्त सांसरिक सुखों से वैराग्य धारण कर कर्मों की निर्जरा हेतु जैनेश्वरी दीक्षा अंगीकार की तथा वन की ओर प्रस्थान किया| आपके साथ हजारों अन्य राजाओं ने भी आपके मार्ग का अनुसरण किया| दीक्षा लेते ही आपने मौन धारण कर लिया|

आप अपने आत्मसाधना में निरंतर आरूढ़ रहे परन्तु आपकी कठिन चर्या से च्युत होकर अनेक राजाओं ने अन्य मार्ग को अपना लिया| जैन मुनि की आहारचर्या का किसी को भी ज्ञान न होने से आपको आहार नहीं मिला और फिर जब आप हस्तिनापुर नगरी पहुंचे तो वहां के राजा श्रेयांस को जातिस्मरण से आहारचर्या का ज्ञान हुआ और उन्होंने आपको नवधाभक्ति पूर्वक इक्षुरस का आहार करवाया| तभी से वह दिन अक्षय तृतीया के रूप में लोकप्रचलित हुआ जो आज भी जनमानस मना रहा है| कैवल्यज्ञान की उत्पत्ति के पश्चात् आपके दिव्य समवशरण का नगर-नगर में मंगल विहार हुआ तथा आपकी दिव्यवाणी से ज्ञानपिपासुओं की क्षुधा शांत हुई| जीवन के अंतिम पड़ाव में आप कैलाश पर्वत के उच्च शिखर पर ध्यानस्थ हुए जहाँ से आप समस्त कर्मों की निर्जरा कर परम पद में सदा के लिए अवस्थित हो गए| यह कहना कोई अतिश्योक्ति न होगी कि आपने अपने आदर्श जीवन व सदुपदेशों से जीने व मरने की सम्यक कला का ज्ञान दिया| भगवान आदिनाथ के नाम से आपका उल्लेख लगभग सभी मान्यताओं के प्राचीन ग्रंथों में स्पष्ट रूप से उल्लेखित है|

आपके ज्येष्ठ पुत्र चक्रवर्ती भरत ने भी छह खण्ड के राज्य को त्याग कर जैनेश्वरी दीक्षा अंगीकार की तथा कर्मों की निर्जरा कर मोक्ष प्राप्त किया| इन्हीं चक्रवर्ती भरत के नाम पर हमारे देश का नाम भारत पड़ा, जिसका उल्लेख विष्णु पुराण में भी मिलता है| हमारे देश के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू जी ने उड़ीसा स्थित खारवेल के शिलालेख पर "भरतस्य भारत" प्रशस्ति देख कर ही इस देश का संवैधानिक नाम भारत किया था| इज़राइल में भगवान ऋषभदेव के माता-पिता नाभिराय व मरुदेवी की पूजा अर्चना भक्तिपूर्वक की जाती है| आपके ही पुत्र बाहुबली ने कठोर तप कर सिद्धत्व की प्राप्ति की जिनकी 57 फ़ीट विशाल खड्गासन प्रतिमा कर्णाटक के श्रवणबेलगोला में उत्तुंग खड़ी है और विश्व को दिगंबरत्व का दिव्य सन्देश प्रदान कर रही है| प्रथम तीर्थंकर देवाधिदेव ऋषभदेव भगवान का मोक्ष कल्याणक दिवस जैन धर्मावलम्बियों के साथ-साथ समस्त देशवासियों के लिए हर्षोल्लास का प्रतीक है।

साहित्य

विपुल समृद्ध : प्राकृत भाषा

- ब्र० समता दीदी

प्राचीन और आद्यभाषा इस भारत देश में जैन धर्म में सुदीर्घ काल तक पल्लवित और पुष्पित हुई। प्राकृत भाषा अपने जन्म से ही जन सामान्य से जुड़ी हुई है। ध्वन्यातमक और व्याकरणात्मक सरलीकरण की प्रवृत्ति के कारण प्राकृत भाषा लंबे समय तक जन सामान्य के बोलचाल की भाषा रही है। प्राकृत ग्रंथों मे कहा है -

पाइय कव्वस्स नमो पाइय कव्वं च णिम्मियं जेण।
ताहं चिय पणमामो पढिऊण य जे वि याणंति॥

अर्थ - प्राकृत काव्य को नमस्कार हो, प्राकृत की रचना करने वाले को नमस्कार हो, और उन्हें पढ़कर जो उनका गूढ़ार्थ समझ लेते हैं, उन्हें भी नमस्कार हो।

प्राकृत जनभाषा के रूप में इतनी प्रतिष्ठित थी कि उसे **सम्राट अशोक** के समय में राजभाषा होने का गौरव प्राप्त हुआ। उसने अपनी भाषा के प्रचार के लिए दो सशक्त माध्यमों को चुना एक तो उसने प्राकृत में **अभिलेख** और दूसरा प्राकृत में **शिलालेख** खुदवाए ताकि वे अहिंसा, सदाचार, समन्वय का संदेश दे सकें। इन दोनों माध्यम में सम्राट अशोक और प्राकृत भाषा को अमर बना दिया।

प्राकृत भाषा और उसका साहित्य जन सामान्य की संस्कृति से समृद्ध है। स्वाभाविक रूप से प्राकृत भाषा जनता से सम्पर्क रखने का आदर्श साधन बन जाती है, इसलिए प्राकृत भाषा को समुचित आदर प्रदान करते हुए तीर्थंकर महावीर के उपदेश व **सम्राट अशोक** एवं **खारवेल** आदि कई नरेशों ने प्राकृत में **लेख** एवं **मुद्रायें** अंकित करवाकर तथा अपने संदेशों के प्रचार-प्रसार के लिए इस भाषा का उपयोग किया है।

प्राकृत भाषा की विशेषतायें –

१. प्राकृत भाषा अत्यन्त सरल, मधुर एवं मोहक भाषा है प्राकृत में किसी कवि ने कहा है -

गाहाण रसा महिलाण विब्भमा कइ जवाण उल्लावा।
कस्स न हरंति हिययं बालाण य मम्मणुल्लावा॥

अर्थ - जिस प्रकार महिलाओं के विभ्रम (हाव-भाव), कवियों की उक्तियाँ, बालकों की तोतली भाषा किसके मन को आकर्षित नहीं करती है अर्थात् सभी को आकर्षित लेती हैं उसीप्रकार प्राकृत भाषा के रस सभी को बरबस ही आकर्षित लेती हैं।

२. जैन आगम में प्राकृत भाषा का सर्वाधिक प्रयोग हुआ है परंतु वेदों की भाषा में भी प्राकृत भाषा तत्वों का समावेश है।

३. प्रारंभ से ही संस्कृत के नाटकों में प्राकृत का प्रयोग होता रहा है संस्कृत नाटकों में भी ६०% से अधिक प्राकृत का प्रयोग है। संस्कृत ग्रंथों के उदाहरण प्रायः प्राकृत ग्रंथों की गाथाओं से लिए गए हैं।

४. भारत में अधिकांश शिलालेख, अभिलेख तथा मुद्रायें प्राकृत में उपलब्ध है।

अत:ये विभिन्न विवरण हमें सूचना देते हैं कि प्रारंभिक भाषा , स्वाभाविक भाषा , मूल भाषा प्राकृत रही है।

५. समय-समय पर सामान्य जन की विभिन्न बोलियाँ साहित्यिक प्राकृत का रूप भी ग्रहण करती रही हैं। प्राकृत भाषा की समृद्धि में जैन परम्परा के कवियों एवं आचार्यों का योगदान महत्वपूर्ण रहा, परन्तु जनभाषा होने के कारण प्राकृत भाषा से भारतीय भाषाओं का विकास हुआ है। अतः प्राकृत भाषा, सभी भारतीय भाषाओं की जननी भी है। प्राकृत कवियों ने कहा भी है

सयलाओ इमं वाया विसंति एंतो य णेंति वायाओ।
एंति समुद्दच्चियं णेंति, सायराओच्चियं जलाइ॥

अर्थ - जिस प्रकार समस्त जल अर्थात्नदियाँ, समुद्र में विलीन हो जाती है और समुद्र से ही निकलती हैं। उसी प्रकार सभी भाषायें इस प्राकृत भाषा में विलीन ही जाती हैं, तथा इसी प्राकृत भाषा से निकलती हैं।

श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र सिद्धवरकूट

- सचिन जैन बड़ौत

मध्यप्रदेश के खंडवा जिले में नर्मदा और कावेरी नदियों के संगम पर यह अति प्राचीन दिगम्बर जैन सिद्ध क्षेत्र सिद्धवरकूट स्थित है। जैनमतानुसार क्षेत्र से दो चक्रवर्ती, 10 कामदेव व साढ़े तीन करोड़ मुनि मोक्ष को गये हैं। संवत् 1535, इंदौर में निवास करने वाले भट्टारक महेन्द्रकीर्ती जी को अतिप्राचीन क्षेत्र होने का स्वप्न आया। स्वप्न के अनुसार भट्टारक महेन्द्रकीर्ती जी ने वनों में इस क्षेत्र की खोज करना प्रारम्भ किया और लगभग 10 वर्ष की खोज करने के पश्चात् संवत् 1545 में भट्टारक महेन्द्र कीर्ति जी को नर्मदा नदी के तट पर एक जीर्णषीर्ण अवस्था में विशाल मंदिर जी के दर्शन हुये तथा इस मंदिर जी में भगवान आदिनाथ व भगवान चन्द्रप्रभु जी की प्रतिमा के भी दर्शन हुये। संवत् 1951 में मन्दिर जी का जीर्णोधार कराया गया तथा प्रतिमाओं की पंचकल्याण प्रतिष्ठा करवाई गई। क्षेत्र पर मूलनायक प्रतिमा भगवान संभवनाथ जी की है।

वर्तमान में क्षेत्र पर भगवान आदिनाथ, भगवान नेमीनाथ, भगवान पार्श्वनाथ, भगवान शांतिनाथ, भगवान महावीर, भगवान बाहुबली आदि सहित कुल 13 मन्दिर हैं। क्षेत्र पर मानसतम्भ व चरण छतरी भी है। क्षेत्र से कुछ ही दूरी पर एक कुण्ड है जिसे कष्ट निवारक कुण्ड कहा जाता है। माना जाता है कि इस कुण्ड के जल से सभी रोग से मुक्ति हो जाती है। कुण्ड के पास ही एक अति प्राचीन पाण्डुकशिला भी है। क्षेत्र पर अन्य कई प्राचीन प्रतिमायें भी स्थित हैं।

कावेरी नदी के एक तट पर यह सिद्ध क्षेत्र स्थित है तो दूसरी ओर नर्मदा के तट पर ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग स्थित है। क्षेत्र से ओंकारेश्वर आने-जाने के लिये एक झूलापुल व नौका का भी उपयोग किया जाता है। क्षेत्र पर आवास व भोजनालय की व्यवस्था है।

कोरोना काल के बाद इस वर्ष 17-18 मार्च को वार्षिक मेला महोत्सव विभिन्न आयोजनों के साथ आयोजित किया गया है।

दो दिवसीय मेले में 17 मार्च को मंगल गीत, नित्य-नियम पूजन, मण्डल विधान पूजन, आरती, सामायिक पाठ, ध्यान, शास्त्र प्रवचन होंगे। 18 मार्च को आध्यात्मिक रंगों की होली के तहत विशेष मंगल प्रवचन, विमानोत्सव घटयात्रा व भगवान बाहुबलीजी का महामस्तकाभिषेक होगा। उपरांत सभी मंदिरों में ध्वजा चढ़ाई जाएगी। क्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष अमित कासलीवाल, मेला संयोजक बाबूलाल जैन बडवाह, संतोष जैन मामा, विजय काला आदि ने महोत्सव को सफल बनाने की अपील की है। उल्लेखनीय है कि क्षेत्र पर मूलनायक श्री संभवनाथजी के साथ जैन इतिहास की सर्वाधिक प्राचीन भगवान ऋषभदेवजी की प्रतिमा व चिंतामणि पार्श्वनाथ भगवान की अतिशयकारी प्रतिमा विराजमान है।

मैं नर्मदा हूँ

- मधुबाला दुबे इंदौर

जब गंगा नहीं थी, तब भी मैं थी। जब हिमालय नहीं था, तभी भी मैं थी। मेरे किनारों पर नागर-सभ्यता का विकास नहीं हुआ। मेरे दोनों किनारों पर तो दंडकारण्य के घने जंगलों की भरमार थी। इसी के कारण आर्य मुझ तक नहीं पहुंच सके। मैं अनेक वर्षों तक आर्यावर्त की सीमारेखा बनी रही। उन दिनों मेरे तट पर उत्तरापथ समाप्त होता था और दक्षिणापथ शुरू होता था।

मेरे तट पर मोहनजोदड़ो जैसी नागर संस्कृति नहीं रही, लेकिन एक आरण्यक संस्कृति अवश्य रही। मेरे तटवर्ती वनों मे मार्कंडेय, कपिल, भृगु, जमदग्नि आदि अनेक ऋषियों के आश्रम रहे। यहाँ की यज्ञवेदियों का धुआँ आकाश में मंडराता था। ऋषियों का कहना था कि तपस्या तो बस नर्मदा तट पर ही करनी चाहिए।

इन्हीं ऋषियों में से एक ने मेरा नाम रखा, "रेवा"। रेव् यानी कूदना। उन्होंने मुझे चट्टानों में कूदते फाँदते देखा तो मेरा नाम "रेवा" रखा।

एक अन्य ऋषि ने मेरा नाम "नर्मदा" रखा। "नर्म" यानी आनंद। आनंद देनेवाली नदी।

मैं भारत की सात प्रमुख नदियों में से हूँ। गंगा के बाद मेरा ही महत्व है। पुराणों में जितना मुझ पर लिखा गया है उतना और किसी नदी पर नहीं। स्कंदपुराण का "रेवाखंड " तो पूरा का पूरा मुझको ही अर्पित है।

"पुराण कहते हैं कि जो पुण्य, गंगा में स्नान करने से मिलता है, वह मेरे दर्शन मात्र से मिल जाता है।"

मेरा जन्म अमरकंटक में हुआ। मैं पश्चिम की ओर बहती हूँ। मेरा प्रवाह आधार चट्टानी भूमि है। मेरे तट पर आदिमजातियाँ निवास करती हैं। जीवन में मैंने सदा कड़ा संघर्ष किया।

मैं एक हूँ, पर मेरे रुप अनेक हैं। मूसलाधार वृष्टि पर उफन पड़ती हूँ, तो गर्मियों में बस मेरी सांस भर चलती रहती है।

मैं प्रपात बाहुल्या नदी हूँ। कपिलधारा, दूधधारा, धावड़ीकुंड, सहस्त्रधारा मेरे मुख्य प्रपात हैं।

ओंकारेश्वर मेरे तट का प्रमुख तीर्थ है। महेश्वर ही प्राचीन माहिष्मती है। वहाँ के घाट देश के सर्वोत्तम घाटों में से है।

मैं स्वयं को भरूच (भृगुकच्छ) में अरब सागर को समर्पित करती हूँ।

मुझे याद आया! अमरकंटक में मैंने कैसी मामूली सी शुरुआत की थी। वहाँ तो एक बच्चा भी मुझे लाँघ जाया करता था पर यहाँ मेरा पाट 20 किलोमीटर चौड़ा है। यह तय करना कठिन है कि कहाँ मेरा अंत है और कहाँ समुद्र का आरंभ? पर आज मेरा स्वरुप बदल रहा है। मेरे तटवर्ती प्रदेश बदल गए हैं मुझ पर कई बाँध बांधे जा रहे हैं। मेरे लिए यह कष्टप्रद तो है पर जब अकालग्रस्त, भूखे-प्यासे लोगों को पानी, चारे के लिए तड़पते पशुओं को, बंजर पड़े खेतों को देखती हूँ, तो मन रो पड़ता है, आखिर में माँ हूँ!

मुझ पर बने बांध इनकी आवश्यकताओं को पूरा करेंगें। अब धरती की प्यास बुझेगी। मैं धरती को सुजला सुफला बनाऊँगी। यह कार्य मुझे एक आंतरिक संतोष देता है॥

जल है तो कल है....

- साकेत जैन शास्त्री 'सहज'

पानी बिन जीवन नहीं,
यह जीवन आधार।
फिर भी क्यों समझे नहीं,
जनता जल का सार॥

जनता जल का सार, मान ले जल्दी सुख को।
वरना जल बिन तड़प, सहेगी प्रतिक्षण दुख को।
बस इतनी सी बात,समझ कर बन जा ज्ञानी।
फिर पछताए मीत, मिलेगा कहीं न पानी।

शब्द-विचार

शब्द - यह 'शब्द्' धातु का शब्द है। इस 'शब्द्' धातु में जब एक प्रकार के प्रत्यय का योग होता है तब 'शब्द' पद का सर्जन ('सृजन' शब्द अशुद्ध है) होता है। उस प्रत्यय को 'घञ्' प्रत्यय कहते हैं। इस 'शब्द' के अनेक अर्थ हैं :- ध्वनि, आवाज़, लफ़्ज़, बोल, बात, वचन इत्यादिक। शब्द की परिभाषा है - वह सार्थक ध्वनि, जिससे किसी पदार्थ अथवा भाव आदिक का बोध होता हो, उसे 'शब्द' कहते हैं। किसी सन्त, साधु तथा महात्मा-द्वारा रचित पद भी शब्द कहलाते हैं, जिसे 'सबद' के नाम से भी जाना जाता है। अक्षरों और वर्णों से बना और मुख से उच्चरित/उच्चारित होने अथवा लिखा जानेवाला वह संकेत, जो किसी कर्म, भाव अथवा विचार का सूचक हो, 'शब्द' कहलाता है। एक अलंकार का नाम भी 'शब्द' है, जिसे हम 'शब्दालंकार' (शब्द+अलंकार = शब्दालंकार - दीर्घ स्वर सन्धि) कहते हैं। इसी शब्द से जुड़कर कई शब्दों की उत्पत्ति होती है, जिन पर नीचे विचार किया गया है :--

आचार्य पं. पृथ्वीनाथ पाण्डेय

१ - शब्दकाम/शब्द-काम - यह संस्कृत-भाषा का शब्द है। शब्दभेद की दृष्टि से यह विशेषण-शब्द है, जो कि 'बहुव्रीहि समास' का उदाहरण है। इसका अर्थ है, 'बातें करने का शौकीन'। इसे ही 'बातरसिया' और 'बतरसिया' भी कहा जाता है। बातचीत के दौरान जब 'चुहलबाज़ी' होती है तब उसे 'शब्द-काम' कहा जाता है।

२ - शब्दकोश-- यह संस्कृत-भाषा का शब्द है। शब्द-भेद के विचार से यह संज्ञा-शब्द है और लिंग की दृष्टि से पुंल्लिंग। इसका शाब्दिक अर्थ है, 'शब्दों की निधि', 'शब्दों का भाण्डार' ('भण्डार' अशुद्ध शब्द है)। इसमें सम्बन्ध कारक का प्रयोग हुआ है। यह 'षष्ठी तत्पुरुष समास' का उदाहरण है। इसकी परिभाषा है - वह कृति, जिसमें शब्दों की रचना, सम्यक् वर्ण-विन्यास, अर्थ, परिभाषा, प्रयोग, पर्याय, भिन्नार्थक शब्द आदिक दिये हों, 'शब्दकोश' है। इसके लिए यदि कोई 'शब्दकोष' का व्यवहार करता है तो वह अशुद्ध कहलायेगा। ऐसा इसलिए कि 'कोष' शब्द ऐसी निधि भाण्डार तथा ख़ज़ाना इत्यादिक के लिए प्रयुक्त होता है, जहाँ द्रव्य, आभूषण आदिक रखे जाते हैं।

३ - शब्दगुण/शब्द-गुण-- इसका अर्थ है, 'शब्द की अपनी विशेषता'; जैसे - काव्य आदिक में। शब्द-गुण एक प्रकार का अलंकार भी है, जिसके दस प्रकार होते है :-- (१) ओज (२) प्रसाद (३) श्लेष (४) समता (५) समाधि (६) माधुर्य (७) सौकुमार्य (८) उदारता (९) अर्थ-व्यक्ति (१०) कान्ति।

४ - शब्दचातुर्य्य/शब्द-चातुर्य्य-शब्दचातुर्य/शब्द-चातुर्य्य - शुद्ध शब्द 'शब्दचातुर्य्य'/'शब्द-चातुर्य्य' है; परन्तु 'शब्द' के साथ जुड़े 'चातुर्य्य' को 'चातुर्य' में ढालकर इतना प्रचलित कर दिया गया है कि अब इसी का प्रयोग उचित प्रतीत होने लगा है। इस 'शब्द-चातुर्य' को 'वाक्पटुता' भी कहते हैं।

५ - शब्दचित्र/शब्द-चित्र - इसका अर्थ है, 'शब्दों-द्वारा चित्र के समान वर्णन। इसकी परिभाषा है - जब शब्दों में किसी विषय अथवा घटना का ऐसा सुस्पष्ट और विशद वर्णन इस प्रकार से किया जाये कि वह चित्र की तरह से मालूम हो तब वह 'शब्द-चित्र' कहलायेगा। यह 'अनुप्रास' नामक एक शब्दालंकार भी है। यह 'बहुव्रीहि समास' का उदाहरण है।

६ - शब्दचोर/शब्द-चोर - जो दूसरों की रचना, लेखादिक की चोरी करता हो, वह 'शब्दचोर' है।

७ - शब्दजाल/शब्द-जाल - इसे 'शब्दाडम्बर' भी कहते हैं। इसकी परिभाषा है - जब साधारण-सी बात कहने के लिए बड़े-बड़े शब्दों और कठिन वाक्यों का प्रयोग किया जाता है तब उसे 'शब्दजाल' कहते हैं। यह षष्ठी तत्पुरुष समास का उदाहरण है, जिसका विग्रह है, 'शब्द का जाल'।

८ - शब्दानुशासन/शब्द-अनुशासन - इसका अर्थ है, 'शब्द का अनुशासन'। इस प्रकार यह शब्द 'षष्ठी तत्पुरुष समास' का उदाहरण है। इसे सन्धि की दृष्टि से देखें तो यह 'अ+अ = आ' नियमानुसार 'दीर्घ स्वर सन्धि' का उदाहरण है। 'अनुशासन' शब्द संस्कृत-भाषा का शब्द है, जो कि शब्द-भेद के विचार से 'संज्ञा' का 'पुंल्लिंग' (पुलिंग, पुल्लिंग तथा पुंलिंग अशुद्ध शब्द हैं) - शब्द है। 'अनुशासन' में 'अनु' उपसर्ग लगा हुआ है। अनुशासन 'शास्' धातु का शब्द है, जिसका अर्थ 'शासन करना' है। इस 'शास्' धातु के अन्त में जैसे ही 'ल्युट्' प्रत्यय जुड़ता है वैसे ही 'अनुशासन' का सर्जन होता है। उससे 'अन' की ध्वनि (अनुशासन) निकलती है। इसका अर्थ यह हुआ कि जो शब्दों पर शासन करे, वह 'शब्दानुशासन' है। अब प्रश्न है, शब्दों पर किसका शासन रहता है तो उत्तर है - 'व्याकरण का'।

९ - शब्दप्रमाण/शब्द-प्रमाण - इसके अर्थ हैं - आप्त प्रमाण, मौखिक प्रमाण तथा ज़बानी सुबूत ('सबूत' अशुद्ध शब्द है।) यह 'कर्मधारय समास' का उदाहरण है। इसकी परिभाषा है - किसी के कथनमात्र के आधार पर प्रमाण अथवा साक्ष्य 'शब्दप्रमाण' कहलाता है।

१० - शब्दप्राश/शब्द-प्राश - इसमें लगे शब्द 'प्राश' संस्कृत के 'प्राशन' का शब्द है, जिसके अर्थ हैं, भोजन करना और स्वाद लेना। 'अन्नप्राशन' नामक यौगिक शब्द इसी से बना है। अब, जब हम इस 'प्राश' से पहले 'शब्द' (शब्दप्राश) लगाकर इसके अर्थ पर विचार करते हैं तब ज्ञात होता है कि इसके अनेक अर्थ हैं :- 'शब्द के अर्थों का अनुसंधान' और 'शब्द के अर्थों को पाने की जिज्ञासा'।

११ - शब्दबोध/शब्द-बोध - इसका अर्थ है, 'शब्द का ज्ञान'। जब किसी की कही हुई बातों से प्राप्त ज्ञान को 'शब्दबोध' कहा गया है। एक अन्य परिभाषा समझें - किसी के अस्तित्व, प्रकार, स्वरूप आदिक का होनेवाला मानसिक भान 'बोध' कहलाता है। बोध 'बुध्' धातु का शब्द है, जिसका अर्थ 'जानना' है। इसी धातु के अन्त में 'घञ्' प्रत्यय के जुड़ने से 'बोध' शब्द की उत्पत्ति होती है। 'बोध' को 'आश्वासन' भी कहा जाता है।

१२ - शब्दभेद/शब्द-भेद - यह संस्कृत-भाषा का शब्द है। शब्द-भेद के विचार से यह 'संज्ञा' का शब्द है। लिंगभेद की दृष्टि से यह 'पुंल्लिंग-शब्द' है। शब्दों के अन्तर अथवा विशेषता को 'शब्द-भेद' कहा गया है। ध्वनि के अन्तर को भी 'शब्दभेद' की संज्ञा दी गयी है। वाक्य में प्रयोग किये गये शब्दों का, जब व्याकरण के अनुसार उनके कार्यों और प्रयोग आदिक की दृष्टि से भेद किया जाता है तब वह 'शब्दभेद' कहलाता है। व्याकरण में अपने कार्य, स्थिति, सम्बन्ध आदिक के आधार पर किया गया शब्दों का वह विभाजन, जिससे यह ज्ञात हो सके कि कोई शब्द संज्ञा है अथवा सर्वनाम, क्रिया है अथवा क्रिया-विशेषण इत्यादिक, 'शब्दभेद' कहलाता है। शब्दभेद इस प्रकार हैं : - संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, क्रिया-विशेषण, सम्बन्धबोधक, अव्यय, संयोजक तथा विस्मयादिबोधक।

१३ - शब्दवेधी/शब्द-वेधी/शब्दबेधी/शब्द-बेधी - हमारे अधिकतर विद्वज्जन 'शब्दभेदी' का प्रयोग करते हैं, जो कि अशुद्ध है। शब्दभेदी का अर्थ हुआ, 'बिना देखे हुए मात्र ध्वनि के आधार पर शब्दों में अन्तर करनेवाला'; 'शब्दों में फूट डालनेवाला'। शुद्ध और उपयुक्त शब्द 'शब्दवेध'/'शब्दबेध' है, जिससे 'शब्दवेधी'/'शब्दबेधी' की रचना होती है। शब्दभेद के विचार से यह 'विशेषण-शब्द' है। हम किसी वस्तु अथवा लक्ष्य को 'भेदते' नहीं, बल्कि 'वेधते' हैं। जब हम बिना देखे हुए केवल ध्वनि सुनकर लक्ष्य का वेधन करते हैं तब हम 'शब्दवेधी' कहलाते हैं। यह संस्कृत-भाषा का शब्द है, जो कि 'विध्' धातु का शब्द है, जिसका अर्थ 'छेदना' है और 'निशाना मारनेवाला' भी। इसी से 'विशेषण' शब्द 'वेधी' की रचना होती है। इस गुण से युक्त दो ही धनुर्धर हुए हैं:- अर्जुन और दशरथ।

मातृ महिमा

नास्ति मातृसमा छाया,
नास्ति मातृसमा गतिः ।
नास्ति मातृसमं त्राणं,
नास्ति मातृसमा प्रिया ।

माता के समान कोई
छाया नहीं है ।
माता के समान कोई
सहारा नहीं है ।
माता के समान कोई
रक्षक नहीं है ।
तथा माता के समान कोई
प्रिय नहीं है ।

युवा जगत

युवावर्ग धर्म-स्थानों से विमुख क्यों?

- सुगालचन्द जैन, चेन्नई

बुजुर्ग व्यक्तियों द्वारा विभिन्न विषयों व वर्तमान धार्मिक परिस्थितियों पर जब आपस में चर्चा होती है तब वर्तमान में युवावर्ग की धर्म स्थानों से दुरी चर्चा का केंद्र होती है। उनका मानना है कि आज का युवावर्ग धर्म या धर्म स्थानों से दूर होता जा रहा है। वे धर्म स्थानों में नहीं जाते, धार्मिक क्रियाकलापों में भाग नहीं लेते, अभिभावकों के बार-बार कहने पर वे अनमने मन से जाते हैं। ऐसा क्यों? क्या हमने इस पर ग़ौर किया है?

मेरे दृष्टिकोण से धर्म और युवा भारतीय संस्कृति के दो महत्वपूर्ण अंग है। जहाँ धर्म सभ्यताओं का निर्माण करता है तो समाज उन्हें आकार देता है एवं युवाओं के विचारों और कार्यों को प्रभावित करता है। एक तरफ हमें शिकायत है कि आज का युवावर्ग धर्म स्थानों में नहीं आता दूसरी ओर देखें तो लगेगा कि वर्तमान समय में अधिकतर दीक्षाएं युवावर्ग द्वारा ही ली जा रही है। यह युवक-युवतियाँ सभ्रांत व सामान्य परिवारों से होते हैं। साधु जीवनपथ को अपनाने वालों में बड़ी संख्या में पेशेवर (Professional) चार्टेड अकाउंटेंट, वकील, डॉक्टर, इंजीनियर, शोधकर्ता, स्नातक, स्नातकोत्तर तक शिक्षा ग्रहण कर चुके युवक-युवतियाँ होते हैं।

परन्तु मुझे यह बात भी स्वीकार्य है कि वर्तमान में जैन धर्म के युवक-युवतियाँ धर्म, धर्म स्थानों व जैन दर्शन के नजदीक नहीं है। जिसके विभिन्न कारण हो सकते हैं। जब मैंने इस विषय का अवलोकन करने का प्रयास किया तो मुझे कुछ ऐसे कारण दृष्टिगौचर हुए जो आज के युवक-युवतियों को धर्म व धर्म स्थानों से दूर रखे हुए हैं। जिन्हें मैं आप सब के साथ साझा कर रहा हूँ।

1 युवावर्ग का धर्म से निरंतर दूर होने में कोंवेंट स्कूल, कोंवेंट शिक्षा की महती भूमिका है। साथ ही पश्चिमी संस्कृति का आकर्षण भी युवावर्ग को धर्म से दूर करता है।

2 आज का युवावर्ग जब भी अपने परिवार या बाहर धर्म का पालन करने वाले लोगों को देखता है तो उन्हें उनकी कथनी एवं करनी में बहुत अंतर दिखाई देता है। वह देखता है कि मंदिर, स्थानक, जैन भवन, तेरापंथ भवन में आने वाला व्यक्ति धार्मिक तो है लेकिन नैतिक नहीं हैं। प्रत्येक व्यक्ति अपनी सुविधा के अनुसार धर्म की व्याख्या करने का प्रयास करता है। इसलिए उसे लगता है कि सुविधा ही धर्म है, धर्म धर्म नहीं है।

3 इसके अतिरिक्त धर्मों में मूल सिद्धांतों की अपेक्षा कर्मकाण्डों पर अधिक बल दिया गया है। जिससे भी युवावर्ग धर्म के सही स्वरूप को समझने व जुड़ पाने में अक्षम रहता है।

4 बच्चों का संस्कारी होना उतना ही आवश्यक है जितना कि साक्षर होना। संस्कार ही है जो बालक को धर्म से जोड़ते हैं। वर्तमान भारतीय परिवारों द्वारा पाश्चात्य संस्कृति के अंधानुकरण के कारण संस्कारों की कमी युवा वर्ग को धर्म व धार्मिक माहौल से दूर ले जाने का कार्य कर रही है।

5 आज का युवा भौतिकता को सुख मानकर भौतिकतावाद की चकाचौंध में डूबा हुआ है। वे अपने बड़ों द्वारा किए गए धार्मिक कार्यों के प्रति उदासीन रहते हैं, एवं उन्हें किसी प्रकार की प्रसन्नता नहीं होती।

6 आधुनिक युग में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी ने बहुत प्रगति की चंद्रमा, ग्रहों और ब्रह्माण्ड के विभिन्न रहस्यों का खुलासा किया, जिससे कई प्रकार के मिथक व धारणाएं सबके सामने स्पष्ट हुई। युवा शिक्षित हैं, वह हर वस्तु को तर्क के आधार पर तोलने का प्रयास करते हैं। इसलिए आज का युवावर्ग धर्म को भी तर्क की कसौटी पर तौलने का प्रयास करता है।

7 आज के दौर में युवा रूढ़िवादिता एवं परम्पराओं को धर्म स्वीकार करने को तैयार नहीं है। आज का युवावर्ग वर्तमान में जीना चाहता है, अतीत की महिमा और भविष्य के वादों में नहीं। उसे न नरक का भय है, ना ही स्वर्ग की लालसा। उसे सिर्फ़ वर्तमान से लेना देना हैं।

8 वर्तमान में सामाजिक एवं धार्मिक व्यक्ति सामान्यतः व्यवहारिकता से दूर नजर आते हैं। उनकी कही गई बातों में उसे विचारहीन अनुसरण दिखाई देता है, जो कि युवावर्ग के अब तक अर्जित ज्ञान के विपरीत है।

9 धर्म की सही व्याख्या करने वाले विद्वानों और संतों की कमी है, जिसके कारण युवा धर्म के वास्तविक स्वरूप को नहीं समझ पा रहा है।

10 समाज में जो जुड़ाव और बंधन धर्म देता आया है वह वर्तमान में अनुपस्थित है।

वास्तव में बड़ी संख्या में युवावर्ग धर्म व धर्म स्थानों से दूर हुआ है। उपरोक्त बताए हुए कारण व ऐसे ही अनेकानेक कारण है जिसके कारण आज का युवावर्ग धर्म व धर्म स्थानों से दूर हुआ जा रहा है। अतः इस विषय पर हमें मिल बैठकर चिंतन-मनन करना चाहिए। जैन समाज में जागृति लानी होगी। हमारा प्रयास इसे पारदर्शी बनाकर जन-जन तक पहुँचाने का होना चाहिए।

चिंतन

संस्कृति और संस्कार

- प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़

संस्कृति का शाब्दिक अर्थ - सम अथवा भली प्रकार किया जाने वाला व्यवहार अथवा क्रिया है। यह परिष्कृत अथवा परिमार्जित करने के भाव का सूचक है। संस्कृति शब्द का एक अन्य अर्थ संस्कार से भी जोड़ा जाता है। संस्कृति मानव के आदि काल से लेकर आज तक की वह संचित निधि है जो उत्पादक तथा परिष्कार द्वारा निरन्तर प्रगति करती हुई एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को उत्तराधिकार स्वरूप प्राप्त होती चली आई हैं तथा भविष्य में भी उसकी यही गति रहेगी। संस्कृति सम्बन्धी अनेक अवधारणाओं पर विचार करते हुए यदि एक सन्तुलित दृष्टिकोण अपनाया जाये तो संस्कृति मानव की दशा तथा दिशा का बोध कराती है। इसमें मानव जीवन के समस्त गुण निहित हैं। संस्कृति के गुणों के वशीभूत होकर ही मनुष्य उन क्रियाओं को करता है जो उसे ज्ञान-विज्ञान, समाज, धर्म, साहित्य, कला, दर्शन और चिन्तन की ओर अग्रसर करती हैं। मानव की समस्त क्रियाओं, व्यवहारों, उत्पादन, परिष्कार एवं उन्नति का मिला जुला रूप ही संस्कृति हैं। संस्कृति द्वारा सत्यं, शिवं, सुन्दरम् के लिए मन मस्तिष्क में आकर्षण उत्पन्न होता है और उसकी अभिव्यक्ति होती हैं। असल में संस्कृति जीवन का एक तरीका है और यह तरीका सदियों से जमा होकर उस समाज में छाया रहता है जिसमें हम जन्म लेते है। अपने जीवन में हम जो संस्कार जमा करते है वह भी हमारी संस्कृति का अंश बन जाता है और मरने के बाद हम अन्य वस्तुओं के साथ-साथ अपनी संस्कृति की विरासत भी अपनी भावी पीढ़ीयों के लिए छोड़ जाते हैं। यही नहीं, अपितु संस्कृति हमारा पीछा जन्म जन्मान्तरों तक करती हैं। अपने यहाँ एक साधारण कहावत है, जिसका जैसा संस्कार होता है उसका वैसा ही पुनर्जन्म भी होता है। संस्कार या संस्कृति असल में शरीर का नहीं आत्मा का गुण है। संस्कृति मानव के भूत, वर्तमान तथा भावी जीवन की सर्वांगपूर्ण अवस्था है। यह जीवित रहने का ढंग है। यदि विवेचनात्मक दृष्टि से निरीक्षण किया जाये तो हमें इस परिणाम की प्राप्ति होगी कि जन्म से लेकर मृत्यु तक तथा उसके भी उपरान्त जन्म-जन्मान्तर तक संस्कृति समस्त मानव चेतना को व्याप्त किये हुए हैं। व्यक्ति के आचरण,चिन्तन, क्रियाशीलता, ज्ञान, आध्यात्म एवं कल्पना में संस्कृति का ही रूप स्थिर है। जीवन का कोई भी अंग संस्कृति की परिधि के बाहर नहीं हैं। सभ्यता का सम्बन्ध उपयोगिता से होता है। मनुष्य केवल उन्ही कार्यों को करता है जो उसके लिये उपयोगी होते हैं। जंगलीपन अथवा बर्बरता की स्थिति से उभर कर जब मनुष्य ने अपनी सुरक्षा, सुविधा तथा सामाजीकरण की ओर प्रथम चरण उठाये तभी से उसे 'सभ्य' की संज्ञा से विभूषित किया जाने लगा। दूसरे शब्दों में हम कहते हैं कि जब मनुष्य ने अन्दर की स्थिति को त्याग कर अपनी भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सफल प्रयोग करने प्रारम्भ किये तभी वह सभ्यता की स्थिति में आ गया। इस प्रकार सभ्यता बर्बरता के विरुद्ध जीवित रहने की दशा है। सभ्यता जीवित रहने की दशा है तो संस्कृति इस दशा को दिशाबोध कराती है। संस्कृति का सम्बन्ध उपयोगिता से न होकर, उपयोगिता से प्राप्त मूल्यों से है। इस प्रकार संस्कृति का अर्थ सभ्यता का भीतर से प्रकाशित हो उठना है। जब मनुष्य लक्ष्य की ओर अग्रसर होता है तो सभ्यता का जन्म होता है और जब मनुष्य को लक्ष्य की प्राप्ति हो जाती हैं तो उसके क्रियाकलाप, विचार एवं कल्पना आदि परिष्कृत हो जाते हैं-यह परिष्कार ही संस्कृति है। सभ्यता तथा संस्कृति का सम्बन्ध इतना घनिष्ठ है कि उन्हें एक दूसरे से अलग करना असंभव सा है। जब सभ्यता ने अपने लक्ष्यों की प्राप्ति कि तो कतिपय परिणाम सामने आये- ये परिणाम ही संस्कृति के तत्व हैं। इस प्रकार व्यक्ति, समाज, सभ्यता तथा संस्कृति मानव जाति की प्रगति के बढ़ते हुए चरण हैं। अतः सभ्यता तथा संस्कृति का सम्बन्ध क्रमिक है। मनुष्य की सर्वप्रथम आवश्यकता स्वयं उसके अस्तिव को बनाये रखना है। इसके लिये मनुष्य ने विभिन्न उपयोगी कार्य किये- जैसे अन्नोत्पादन, जीवन की सुरक्षा हेतु प्रबन्ध, दैनिक जीवन के उपकरणों का निर्माण आदि। जब उसका अपना जीवन सुरक्षित एवं निश्चिन्त हो गया तो उसका ध्यान अपने मानसिक जगत की ओर गया तथा उसके संस्कृति के गुणों का विकास किया। इस प्रकार सभ्यता तथा संस्कृति बिलकुल एकाकार हो गई। सभ्यता तथा संस्कृति की आदि गाथा में पहले तो मनुष्य सभ्य हुआ और फिर उसने

सांस्कृतिक गुणों का विकास किया परन्तु कुछ ही समय पश्चात् सभ्यता संस्कृति की अनुगामिनी हो गई। अब संस्कृति ने सभ्यता को विकसित होने की क्षमता प्रदान करना शुरू किया और आज हम यह निश्चित रूप से कह सकते हैं कि संस्कृति के अभाव में सभ्यता का अपना अस्तित्व नहीं हो सकता। भारतीय संस्कृति वसुधैव कुटुम्बकम् की रही है। यह संस्कृति हमें यह शिक्षा देती है कि हम साथ मिलकर रहे, सबका सम्मान करें और देषहित में चिंतन करें। यह संस्कृति सहिष्णुता की संस्कृति है। भारतीय संस्कृति में परिवार की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। छोटा बच्चा जब पैदा होता है तो धीरे-धीरे वह परिवार से शिक्षा लेता है। परिवार में सबसे महत्त्वपूर्ण भूमिका माता की होती है। माता ही बच्चों को संस्कारित बनाती है। बच्चा धीरे-धीरे परिवार समाज और अपने परिवेश से जैसा सीखता है वैसे ही उसका संस्कार निर्मित होता जाता है। इस प्रकार धीरे-धीरे वह एक सच्चा नागरिक बन जाता है। संस्कार और संस्कृति का घनिष्ठ संबंध है। दोनों एक दूसरे के पूरक है। सभ्यता संस्कृति की अनुगामिनी हो गई। अब संस्कृति ने सभ्यता को विकसित होने की क्षमता प्रदान करना शुरू किया और आज हम यह निश्चित रूप से कह सकते हैं कि संस्कृति के अभाव में सभ्यता का अपना अस्तित्व नहीं हो सकता। भारतीय संस्कृति वसुधैव कुटुम्बकम् की रही है। यह संस्कृति हमें यह शिक्षा देती है कि हम साथ मिलकर रहे, सबका सम्मान करें और देषहित में चिंतन करें। यह संस्कृति सहिष्णुता की संस्कृति है। भारतीय संस्कृति में परिवार की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। छोटा बच्चा जब पैदा होता है तो धीरे-धीरे वह परिवार से शिक्षा लेता है। परिवार में सबसे महत्त्वपूर्ण भूमिका माता की होती है। माता ही बच्चों को संस्कारित बनाती है। बच्चा धीरे-धीरे परिवार समाज और अपने परिवेश से जैसा सीखता है वैसे ही उसका संस्कार निर्मित होता जाता है। इस प्रकार धीरे-धीरे वह एक सच्चा नागरिक बन जाता है। संस्कार और संस्कृति का घनिष्ठ संबंध है। दोनों एक दूसरे के पूरक है।

गलत रास्ते पर कितने ही आगे निकाल गए हो, वहाँ से लौट आना चलते रहने से बेहतर है।

- सत्पथ

स्वयं अध्ययन ही आत्मिक मिलन है

- अनिल चेतन जैन, मेरठ

सारा निर्माण हमारी आंतरिक सोच व नजरिये में है, मौत जिन्दगी की कशमकश क्यों ? इस सब्जेक्ट में फंसकर खुद को हतोत्साहित निराशा उदासी न दे ,हम बस स्वयं को

एडिट व ऑडिट करें, सारी दुनिया का बोझ भार अपने सिर पर लाद कर न घूमें ,बस हमें अपने को मुट्ठी में बंद करना है, हम बस स्वयं को आत्मानुशासन में ढाले, कौन क्या कर रहा है इस विकल्प से निकले ,बस सिर्फ यह सोचे मुझे क्या कैसे क्यों कहां अपने को लक्षित करना है, एक ही चीज पर फोकस करें जैसे एकलव्य ने धनुर्धर बनने के लिए किया था , अगर हमारी सोच व फोकस अटल है तो हम पाषाण की चट्टान को भी अपने ध्यान व कर्म से चूर चूर करके अपने लिए रास्ता बना सकते हैं, ऐसे एक नहीं सैकड़ों उदाहरण इतिहास व पुराणों में है , बस हम अपने भय व कमजोरी से यह इमेजिन कर लेते हैं यह कार्य नहीं होगा और हम आलस्य करके खुद को आलसी बना लेते हैं । एक बात हम अपने अनुभव व चिंतन से आपसे कहना चाहते हैं कि जिस समय हम खुद को आत्म निरीक्षण करके आत्म लक्ष्य पर अडिग रहने के लिए संकल्पित कर लेते हैं तो हमें अपनी मंजिल पर पहुंचने में लाखों बाधाएं भी हमारा रास्ता रोकने की कोशिश करें तो हम उन बाधाओं को तोड़कर भी अपनी मंजिल पर पहुंच सकते हैं , आप प्रत्यक्ष देख सकते हैं , मोदी और योगी ने अपने कर्त्तत्व व व्यक्तित्व से असम्भव कार्य को भी सम्भव कर दिया है , यह हम आपको लौकिक उदाहरण देकर समझा रहे हैं, आप अगर आत्मवान बनने का निश्चय लेकर आत्म पुरुषार्थ के साथ आगे बढ़ेंगे तो आप भी आत्मवीर बन सकते हैं। जब हम आत्मा को साधने के लिए मन बना लेते हैं तो हमारे अंदर स्वत ही आत्मशौर्यता का उदय हो जाएगा , स्व को साधते ही सब बाहरी आकर्षणों का जुड़ाव व जुनून खुद ब खुद ही ढीला होना शुरू हो जाएगा आपको कुछ नहीं करना पड़ेगा,यह सिर्फ सोच बदलने का जादू है , बस हम स्वयं अपने मन की वर्क शॉप में खुद को शाश्वत सत्य अजर अमर अविनाशी के रूप में महसूस करे,इसी सोच को साधते साधते आप खुद को डवलप करते हुए अपने से परिचित होकर स्वयं को अति, आसक्ति, विरोध कषाय से दूर करके ध्यास्थ हो सकते हैं । यही जिन बनने का खुद को जीतने का अध्यात्मिक दर्शन व रहस्य है।

लघुकथा

रोटियाँ

- डॉ. शिशुपाल

शहर के व्यस्ततम कॉलोनी में अपने घर के बाहर बैठे बुजुर्ग प्यारेलाल और आत्माराम अपने जमाने की पुरानी यादें ताजा कर रहे थे।

प्यारेलाल बता रहे थे कि हमारे बचपन के समय घर के द्वार सभी के लिए खुले रहते थे। घर में भोजन बनाते समय सबसे पहली रोटी गाय की होती थी। उसके बाद घर के अन्य व्यक्तियों के लिए रोटियाँ बनती थी और घर के पालतू कुत्तों के लिए, चिड़िया के लिए और आगंतुकों के लिए पर्याप्त रोटियाँ बनाया करती थीं।

प्यारेलाल की हाँ में हाँ मिलाते हुए आत्माराम ने कहा कि हम किसी भी समय देखते थे तो घर के चपाती बॉक्स में सदा रोटियाँ उपलब्ध रहती थीं। मांगने वाला कभी भी घर के द्वार से खाली नहीं लौटता था। तभी एक भिखारी जैसा दिखने वाला व्यक्ति उनके पास आ गया और उनके पास ही नीचे बैठ गया।

आगंतुक ने भूखा होने का वास्ता देकर दो रोटियों की याचना की। याचना पर दोनों बुजुर्ग स्तब्ध होकर एक दूसरे का मुंह ताकने लगे। विवशता जताई की दोनों की बहुएँ गिन कर रोटियाँ बनाती हैं। रोटी बनाने से पहले पूछती हैं बाबूजी कितनी रोटियां खाओगे अतः अतिरिक्त रोटियाँ होने की संभावना शून्य थी। रोटी की आस में द्वार पर बैठा भिखारी दोनों बुजुर्गों को जमाने के अंतर का अहसास करवा रहा था।

गुरुर

- सुनीता अग्रवाल इंदौर

विनय की शादी होने वाली थी, पिताजी ने थोक मूल्य की किराना दुकान खुलवा दी थी।

विनय मेहनती था, खूब मन लगाकर काम करता था स्वभाव भी मिलनसार था, दुकान में दिन दूनी रात चौगुनी कमाई होने लगीं। उसकी गिनती नगर के प्रतिष्ठित परिवार में होने लगीं।

कम समय में मिलने वाली सफलता से गुरूर आ गया अब और अधिक कमाने के चक्कर में आस पास के ग्रामीण क्षेत्रों में उधारी माल देने लगा लोग पैसा देने में अगर-मगर करने लगे। आए दिन व्यापारियों से तू-तू मैं-मैं होने लगीं। कई दुकान वाले तो दूर से देख लेने पर ही दूकान बंद कर भाग जाते, इन कारणों से उसकी साख कम होने लगी।

घर पर पिताजी के समझाने पर उल्टा असर होता, पत्नी पर भी बेबात बरस पड़ता। कुल मिलाकर विनय का गुरुर और गुस्सा सब कुछ खत्म किए दे रहा था।

देर से ही सही पर गुस्सा, गुरुर परिवार की नींव को हिलाकर रख देते है ध्यान करने से उसे यह बात समझ आने लगी थी।

विश्व महिला दिवस की हार्दिक बधाई...

राष्ट्रस्य सुदृढ़ा शक्तिः
समाजस्य च धारिणी।
भारते संस्कृता नारी
मता नारायणी सदा॥

भारत में सुसंस्कृत नारी को राष्ट्र की सुदृढ़ शक्ति,
समाज का धारण करने वाली और देवी का स्वरूप माना गया है।

काव्य जगत

होली

- बृजेन्द्र सिंह झाला 'पुखराज', कोटा

फ़ागुन-मन-भावना है गुलाल,
खुशी एक रंग-हँसी पिचकारी।
उल्लास-मगन-अपनापन की,
सबसे बड़ी यह अनमोल पिटारी ।।

भाईचारे से सजी यह रंगोली,
कड़ी एकता की जो बांधे है डोरी।
यह चंग बजाती है-जंग मिटाती-
तराने बिखेरती आई है होली ।।

मेल दिलों का है यही मिटाऐं,
यह आपस में टूटे दिलों को है जोड़ें।
प्यार के रंग में लगाते ही डुबकी तो,
धुल जाते सारे ग़मों के हैं फोड़े ।।

चल रहे रंजिश-भरम सदियों से,
यह एक पल में फटाफट तोड़ें।
हो जाते हम सबके दिल दरिया जो,
तन हैं काले पर हैं मन के गोरे ।।

साल के बारह महीनों में ऐसा,
लगता यह पावन स्वर्ग जहाँ पर,
यह है प्रतीक बना एकता का जो,
सबक बना हम सबका जहाँ पर ।।

सरस्वती-गंगा-यमुना सा प्यारा,
ऐसा त्रिवेणी संगम जहाँ पर ।
हिलमिलजुल कर रहना सिखायें,
होली ही ऐसा है पर्व जहाँ पर ।।

फ़ाग़ के झाग़ से रंचित अम्बर,
नाचे धरा पर मस्तों की टोली।
यह चंग बजाती है-जंग मिटाती-
तराने बिखेरती आई है होली ।।

मुबारक हो होली

- रमा भाटी

मुबारक हो सबको,
होली का त्यौहार ।
लाल, पीले, गुलाल,
रगों का है त्यौहार ॥

जैसे मथुरा की खुशबू,
गोकुल का हार ।
जैसे वृंदावन की सुगंध,
बरसाने को प्यार,
तो मानो होली है।

जैसे कृष्णा संग खेले,
राधा फूलों से,
संग में गोपियों का साथ,
हो होली पे ।
गर दिल में हो खुशियाँ,
जीवन में रंगों की हो भरमार
तो मानो होली है।

ढेर सारी खुशियों,
से भरा हो परिवार
भरा हो जिंदगी में
प्यार ही प्यार
ये है फागुन का त्यौहार
तो मानो होली है।

सूरज की किरणें,
खुशियों की बहार
रंजिशो को भुलें,
गले मिल सब
करें मुंह मीठा,
मिलकर संग मनाएँ
खुशियों भरा त्योहार
तो मानो होली है।

काव्य जगत

जग को खुशियाँ देता चल

- डॉ. योगेन्द्र नाथ शर्मा 'अरुण'

ढलता सूरज बोला मुझ से,
जग को खुशियाँ देता चल!
कोई पूजे या ना पूजे,
अन्धकार से लड़ता चल!!

उगता हूँ मैं रोज़ सवेरे,
जागरण-मंत्र जग को देता!
मेघ बना लौटता वो जल,
सागर से जो मैं लेता!!

परोपकार करता चल तू भी,
सब की खातिर तू भी जल!
ढलता सूरज बोला मुझ से,
जग को खुशियाँ देता चल!!

तमस जगत को निगल न जाए,
मेरी तरह लड़ना होगा!
शक्ति बहुत है अंधकार की,
ताल ठोक अड़ना होगा!!

जगा जगत को पूर्ण शक्ति से,
उजाला हो जाएगा कल!
ढलता सूरज बोला मुझ से,
जग को खुशियाँ देता चल!!

जो भी लड़ा निस्स्वार्थ भाव से,
इस जग ने उस को ही पूजा!
मत घबराना, लड़ते जाना,
भले ना साथ आए दूजा!!

जगत करेगा याद तुझे भी,
पूजेगा तुझ को हर पल!
ढलता सूरज बोला मुझ से,
जग को खुशियाँ देता चल!

पतंग

- प्रवेश 'अकेला', आगरा

इठलाती है बलखाती है,
वो दूर गगन में जाती है।
पतंग की फितरत है उड़ना,
जीने की राह बताती है।।

नभ में जाती वो दूर दूर,
नित सपने नये दिखाती है।
स्वछंद उड़ती नीलगगन में,
निज डो हाथ पकड़ाती है।।

बाधायें करते हुये पार,
अपना परचम फहराती है।
पतंग की फितरत है उड़ना,
जीने की राह बताती है।।

मंजिल कितनी दूर भले ही,
लगातार उड़ते जाना है।
रुकना है ना ही थकना है,
मंज़िल पर ध्यान लगाना है।।

मिलते अवरोध बहुत फिर भी,
राह वह अपनी बनाती है।
पतंग की फितरत है उड़ना,
जीने की राह बताती है।।

सपने देखना नहीं काफी
संकल्प उन्हें बनाना है।
जुट जाना है लग जाना है,
लक्ष्य अवश्य हमें पाना है।।

मछली सा हम लक्ष्य बनायें,
अर्जुन की याद दिलाती है।
पतंग की फितरत है उड़ना,
जीने की राह बताती है।।

काव्य जगत

महिलाओं को नमन हमारा

- रघुनंदन हटीला 'रघु'

महिलाओं को नमन हमारा, आज करो स्वीकार।
महिला बिन क्या होता मानव,यह जग घर परिवार।।
शिक्षित महिलाओं से होता,
शिक्षा का विस्तार।
आज सुधारें अर्थ व्यवस्था,
सफल करें बाज़ार।।

सहनशीलता त्याग सिखातीं,
ममता पीड़ा प्यार।
संघर्ष प्रेरणा दें हिम्मत,
दें जीवन आधार।।

इस युग की ये नूतन महिला,
नहीं रही लाचार।
भारतीय सेना में जाकर,
आज उठाती भार।।

डॉक्टर अरु अभियंता होतीं,
अधिकारी सरकार।
खेलकूद में रहतीं आगे,
करती दूर विकार।।

ये नित ट्रेन विमान चलाएं,
स्कूटर अरु कार।
सभी तरह का कार्य करें ये,
करें सभी व्यापार।।

बनीं प्रवक्ता कवि विचारक,
दें उत्कृष्ट विचार।
मंत्री पद पर आसित होकर,
करें देश उद्धार।।
अब महिलाएं आज बनीं हैं, प्रजातंत्र की धार।
महिलाओं को नमन हमारा, आज करो स्वीकार।।

फूलों सा मुस्काता चल

- डॉ. किरण जैन

फूलों सा मुस्काता चल।
गीत नेह के गाता चल।

सौरभ का हरकारा बन ,
गंध पत्र बिखराता चल।
सुधियों के गलियारों की,
थोड़ी धूल उठाता चल।

भोर सिंदूरी कहती है,
तारों सा मुस्काता चल।
मौसम मस्त मलंग हुआ,
तू भी अब बौराता चल।

सपनों की सुंदर बेला,
इनको भी दोहराता चल।
रोकर घटती जाती है,
हँसकर उम्र बढ़ाता चल।

ऋतु वासंती आ पहुँची,
पाखी तू मद माता चल।
भाव रंगीले इंद्रधनुष,
छत पर रोज उगाता चल।

हरे उदासी मौसम की,
राग बसंती गाता चल।
हवा उड़ाती गंध मधुर,
आँचल खूब सजाता चल।

अंतर्मन ने गीत लिखे हैं,
तू उनको दोहराता चल।
नाते जिसमें नेह भरे,
ऐसा नगर बसाता चल।

महिलाओं से सम्बंधित पर्यायवाची शब्दों के अर्थ

- डॉ. सुदीप जैन दिल्ली

1. महिला = मही(पृथ्वी) पर ला(लानेवाली)। {इसका अभिप्राय 'जन्मदात्री' है, न कि धरती पर पटकनेवाली} सृष्टिकर्त्ता के रूप में ब्रह्मा जी का स्मरण वैदिक-संस्कृति में किया गया है, यह सत्य है, किन्तु वर्तमान में हमारी दैहिक-सृष्टि का कर्त्री यदि कोई है, जिसे हम साक्षात् जानते हैं, तो वह 'महिला' ही है, जो मातृत्व के द्वारा 'निर्मात्री' भी होती है और 'जननी' भी है। 'मह् पूजायाम्' धातु से निष्पन्न होने के कारण भारतीय संस्कृति में 'महिला' शब्द स्वाभाविक रूप से समादृत-व्यक्तित्व के लिये ही प्रयुक्त होता है।

2. गृहणी = 'गृह' (पूरा परिवार) हो जिसके अवदानों का 'ऋणी'। यद्यपि यह अर्थ भले ही व्यंग्यार्थ के रूप में ग्रहण किया जाता हो, परन्तु यह सुनिश्चित है कि 'गृह' की पूर्णता व सार्थकता तो गृहिणी के आधान से ही जीवन्त होती है।

3. स्त्री = 'स्त्यै शब्द-संघातयोः' धातु/क्रिया के अर्थ के अनुसार जिसके निमित्त से शब्दों का सृजन प्रारंभ होता है (ज्ञातव्य है कि विश्वस्तरीय अध्ययन से यह ज्ञापित होता है कि कोई भी शिशु अपने जीवन का प्रथम-शब्द 'माँ' का वाचक ही बोलता है और उस बालक की प्रथम-शिक्षिका भी उसकी माँ ही होती है।) अतः शब्द-प्रक्रिया के जन्म/आविष्कार एवं विकास में स्त्री-सत्ता का अनन्य-योगदान होने से उन्हें 'स्त्री' कहा गया है। तथा 'परिवार' नामक प्राथमिक-संघटन का आधार भी स्त्री ही होती है। यदि स्त्री न हो, तो व्यक्ति कभी संघटित होने की मानसिकता में ही नहीं आयेगा। दूसरे शब्दों में कहा जाये तो मनुष्य को 'सामाजिक-प्राणी' कहा तो जाता है, किन्तु उसकी संघटनात्मक-सामाजिकता की सूत्रधार यही 'स्त्री' होती है।

4. वनिता = "यूनां परिणता तपस्येति मतं मम"- यह परिचय कोशग्रन्थों में 'वनिता' शब्द का दिया गया है। इसका अर्थ है कि जो युवजनों को तपस्या/मेहनत में परिणत कर दे, वह 'वनिता' है। इसे मोटिवेशन/संप्रेरक अर्थ में लिया जाना चाहिये।

5. नारी = यह शब्द भले ही 'नर' का स्त्रीत्वबोधक रूप है, परन्तु 'नर' शब्द के जो अर्थ श्रेष्ठ, शौर्यवान्/पुरुषार्थी आदि किये जाते हैं, तो वे सभी अर्थ स्वाभाविक रूप से 'नारी' शब्द में परिगृहीत हो ही जाते हैं, क्योंकि यह नर शब्द का ही रूप है। 'नर' तो अकेला 'अवघड़' (बिना शरीर-संस्कारों के) ही रह जाता, उसे 'सुघड़' बनने की प्रेरणामूर्ति तो 'नारी' ही होती है। 'नारी' शब्द के विषय में कुछ लोग 'न+अरि=नारि' व्याख्या भी करते हैं, किन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि 'नारी के समान नर का कोई शत्रु/अरि नहीं है', बल्कि 'नारी नर की अरि' नहीं है-- यह लिया जाना चाहिये, क्योंकि वही नारी तो उसके हृदय में अनुराग का अंकुरण करती है।

6. भामा/भामिनी = यह सौन्दर्य एवं आभा/चमक का वाचक शब्द है। वे स्वयं भी आभावती होतीं हैं और पुरुषों के चेहरों की आभा को बढ़ा भी सकतीं हैं और प्रतिकूल होने पर उस चमक को गायब भी कर सकतीं हैं-- ऐसी विशिष्ट-क्षमता के कारण उन्हें 'भामा/भामिनी' कहा गया है।

7. भार्या = जो 'भवन' को 'घर' बना दे, और जो घर में समृद्धि की कारण बने, इस अर्थ में 'भार्या' शब्द का प्रयोग है। व्यंग्य-कवि इसे 'भार/भारी' के अर्थ में कहकर अपनी भड़ास निकालते अवश्य हैं, किन्तु यह तथ्य से परे है।

8. मादा = यह 'नर' के विपरीत-लिंगी के रूप में समझा जानेवाला वैदेशिक शब्द है, किन्तु भारत की प्राचीन जनभाषा प्राकृत में माँ/माता को ही 'मादा' कहा गया है-- "मादा दे पुज्जा जादा" कहकर उसे स्वाभाविक रूप से 'आदरणीया' कहा है।*सभी महिलाओं को उनकी अन्तरराष्ट्रीय महिमा के स्वीकार-दिवस पर हार्दिक बधाई। यह एक दिन आपकी महिमा का विश्वस्तर पर मनाया जाता है, किन्तु हमारे देश में तो हर दिवस ही 'महिला-दिवस' होता है।

हार्दिक शुभकामनाएँ

देशना जैन (टीकमगढ़) जो बचपन से मूक बधिर, जो बोल नहीं सकती, सुन नहीं सकती, पर अपनी क्षमता से Miss Asia Deaf बनी। जिसे अनेक राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार मिले। वाह ज़िन्दगी ने उसे "जैन रत्न सीजन 2 में शामिल कर सम्मानित किया।

देशना जैन से हम सभी को प्रेरणा लेनी चाहिए और अपने अंदर एक दृढ़ निर्णय करना चाहिए कि परिस्थितियाँ कैसी भी हों हम हौसला सदा बनाये रखेंगे।

आलेख आमंत्रण

साहित्य और संस्कृति के संवर्धन में संलग्न पत्रिका श्री देशना का अयोध्या विशेषांक प्रकाशित हो रहा है पुण्यधरा अयोध्या मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम की जन्म स्थली तो है ही, साथ में जैन बौद्ध आदि अनेक धर्म और आस्थाओं का भी आराधना स्थल है ।

विभिन्न राम कथाओं में अयोध्या के वैभव, स्थापत्य, सामाजिक राजनीतिक, आर्थिक जीवन का विशद वर्णन किया गया हैं । पूज्यभूमि अयोध्या के संबंध में अपना सारगर्भित शोधपूर्ण आलेख प्रेषित कर हमें गौरवान्वित करें । ये आलेख कालांतर में पुस्तक रूप में भी प्रकाशित किए जाएंगे । जो एक विशेष संदर्भ ग्रंथ होगा । कृपया 30 अप्रैल तक रचना प्रेषित कर अनुग्रहित करें । आप आलेख व्हाट्सएप, ईमेल से भी भेज सकते हैं। धन्यवाद !

Editor ..Shree Deshna
H-210 Daffodils, Magarpatta city
PUNE 411013
mamta13in@gmail.com

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस की पूर्व हुआ 51 कवयित्रियों का सम्मान..

नवलगढ़ - कस्बे में स्थित अंगिरा सेवा समिति के विशाल सभागार में राष्ट्रीय साहित्यिक संस्था शब्दाक्षर शाखा झुंझुनू, राष्ट्रीय कवि चौपाल प्रकाशन, एवं राईज समूह के संयुक्त तत्वावधान से देश के विभिन्न क्षेत्रों से पधारी ५१ कवयित्रियों का सम्मान हुआ।

सम्मान समारोह में केरल, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, पश्चिमी बंगाल, गुजरात, कर्नाटक, बिहार, उत्तराखण्ड, महाराष्ट्र सहित अन्य हिंदी भाषी राज्यों से कवयित्रियाँ पधारी।

कार्यक्रम संयोजक मुकेश मारवाड़ी एवं आयोजक रमाकान्त सोनी ने बताया कि कार्यक्रम तीन चरणों में सम्पन हुआ, जिसमें पहला चरण सभी कवयित्रियों का सम्मान प्रतिक चिह्न, प्रमाण-पत्र, साल एवं दुपट्टा ओढ़ाकर किया गया । दूसरे चरण में सभी कवयित्रियों का काव्यपाठ हुआ तथा अंतिम चरण में विराट हास्य कवि सम्मेलन हुआ।

सिन्धु घाटी की सभ्यता में श्रमण परंपरा जैन धर्म के परिपेक्ष्य में

सिन्धु सभ्यता में जैन पंरपरा पर सार गर्भित वक्तव्य डॉ. मैनुअल जोजेफ जी ने दिया। उन्होंने इस दिशा में और शोध करने के लिए नई दृष्टि और प्रेरणा दी है। इस विषय पर वर्षों के गहन अध्ययन को सार रूप मे समाहित करते हुए सिन्धू घाटी की सीलो प्राप्त दिगम्बर प्रतिमाओं प्रतीकों के माध्यम से बहुत तथ्यपूर्ण रूप से बताया कि सिन्धु घाटी के ये प्रतीक अन्य धर्म एवं परपराओं के कम जैन परंपराओं के अधिक निकट है जिसको उन्होंने चित्रों और संदर्भों सहित प्रस्तुत किया तथा यह भी कहा कि वर्तमान परंपराएँ कहीं न कहीं उसी से निकली है तथापि इनका संबंध श्रमणों विशेष कर जैनों के पक्ष को प्रस्तुत करता है क्योंकि महावीर से पहले पार्श्व, नेमि और ऋषभ उसी परंपरा के प्रतिनिधि है तथा योग पर विशेष बल देते हुये जैन धर्म के विशेष गुणों को पतंजलि ने भी स्वीकारा है। इसी क्रम मे मुख्य अतिथि डॉ. रेणुका पोरवाल जी ने अपने उद्बोधन में कहा - मथुरा के कुछ प्रतीकों का साम्य सिन्धु सभ्यता में देखा जा सकता है जिसे मैंने अपनी पुस्तक में और लेखों के माध्यम से कहा है।

अध्यक्षीय उद्बोधन में डॉ. नीलम जैन जी ने अपने विस्तृत वक्तव्य मे विषय पर प्रकाश डालते हुये कहा कि यह सभ्यता कितनी विशाल और प्राचीन है इससे सभी भारतीय परंपराओं की जड़ें जुड़ती है अपनी अनेक विदेशों की यात्रा का अनुभव चिंतन बताते हुये बताया कि माया सभ्यता पर मैंने काफी अध्ययन किया है और कई परंपराये हमे समान दिखी स्वरूप थोड़ा जरूर बदलता है काल क्षेत्र भाषा कला के प्रभाव से पर मूल एक समान है।

बहुत ही सुंदर संचालन आयोजन की सहसंयोजक डॉ. ममता जैन ने किया और आपने इस विषय में रुचि रखने वाले युवाओं एवं शोधार्थियों को विशेष रूप से जोड़कर इस आयोजन को सफल बनाया।

कार्यक्रम के संयोजक शैलेंद्र जैन ने इस वेबिनार में सभी वरिष्ठ जनों एवं युवा साथियों का आभार प्रकट किया।

पुस्तक समीक्षा

जैन मूर्तियों का उद्भव और विकास

पुस्तक - जैन मूर्तियों का उद्भव और विकास
लेखक - बृजेश रावत
प्रकाशक - बी ,आर , पब्लिशिंग कॉरपोरेशन
अशोक विहार, दिल्ली 110052
मूल्य -1250/-
पृ. सं. - 150

वास्तव में, इतिहास एक महासागर के समान है, इसको जितना अधिक मथा जाय, उतना ही अमूल्य रत्न निकलता है। यही कार्य इस पुस्तक में दिखाई देता है। संस्कृत, पालि और प्राकृत साहित्य के अन्तः साक्ष्यों को खंगालने से जैन धर्म अथवा इससे सम्बन्धित अनेक साक्ष्य प्रकाश में आये हैं, जिनसे प्रमाणित होता है, कि जैन धर्म का अस्तित्व अति प्राचीन काल में था। पुस्तक में तीर्थंकर ऋषभ और नेमि से सम्बन्धित ऐतिहासिक प्रमाणों को प्रस्तुत किया गया है। उर्द्धरेता, उर्द्धमन्थी, केशिन्, वातरशना नग्नहू, नगिणिण, निर्ग्रन्थ, यति, शिश्नदेवः, श्रमण, शमन, समन, व्रात्य, त्याज्य इत्यादि शब्दों का विश्लेष्णात्मक अध्ययन भी जैन धर्म के प्रमाणिकता में विशिष्ट है।

सामान्यतः, तीर्थंकर मूर्तियों की प्राचीनता मौर्य काल तक ही जाती है, किन्तु, लेखक ने हड़प्पा कालीन तीर्थंकर जैसी सत्रह मूर्तियों को प्रकाश में लाते हुए, तर्क पूर्ण विवेचना, व्याख्या और स्पष्टीकरण प्रस्तुत किया है। खारवेल अभिलेख एवं आयागपट्ट की विवेचना तथा कुषाण और गुप्त काल की विशिष्ट मूर्तियाँ एक कालानुक्रम प्रकट करती हैं। अस्तु, पुस्तक जैन धर्म और मूर्तियों के संदर्भ में सामान्य परम्परा से पृथक् एक नई दिशा में सोचने पर है साथ ही जैन मर्तियों के उद्भव में इतना अधिक विवेच्यपूर्ण कार्य प्रथम बार हुआ है । पुस्तक का प्रकाशन और मुद्रण उच्च स्तरीय है अंतर्राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप पुस्तक को प्रकाशित किया गया है प्रकाशक की अनुभवी दृष्टि ने पुस्तक को सुंदर व्यवस्थित चित्र अनुरूप प्रकाशित कर आकर्षक बनाया है पुस्तक पठनीय व और संग्रहणीय है लेखक एवं प्रकाशक दोनों बधाई के पात्र हैं।

पुस्तक वार्ता संपन्न

हिमनद : मानव जीवन का आधार

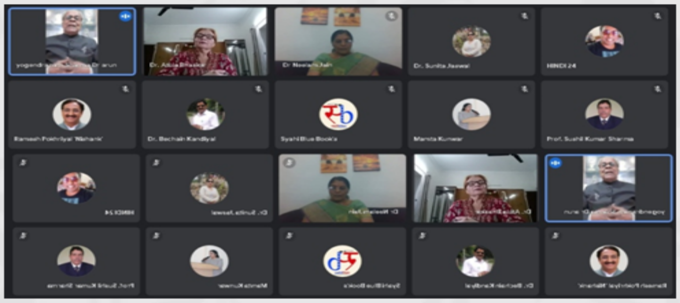

'20 फरवरी 2022' आभासीय पटल पर **पूर्व शिक्षा मंत्री, वर्तमान सांसद,** उत्तराखंड **डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक'** की **पुस्तक - हिमनद : मानव जीवन का आधार - पुस्तक वार्ता** का भव्य आयोजन हुआ। कार्यक्रम संरक्षक डॉ. योगेंद्र नाथ शर्मा अरुण जी के निर्देशन में डॉ. सुनीता जसवाल हिमाचल विश्वविद्यालय वक्ता, मुख्य वक्ता डॉ. अतुल भास्कर एसएन कॉलेज अमृतसर पंजाब अध्यक्षता विदुषी डॉ. नीलम जैन पुणे थी कार्यक्रम का संयोजन डॉ. अनिरुद्ध कुमार एवं सत्यभान सिंह जी ने किया। कार्यक्रम के प्रायोजक - हिमालय विरासत उत्तराखंड, आयोजन स्याही ब्लू बुक दिल्ली ने किया हिमनद : जीवन का आधार पुस्तक मे डॉ. निशंक जी ने इस पुस्तक में पर्वतीय संस्कृति के आर्थिक सामाजिक राजनैतिक पर्यावरण के जैविक ऊर्जा औषधी जीवन रक्षा आदि अनेक रूपों में चर्चा की सभी ने एकमत से स्वीकारा वस्तुतः हिमनद व हिमालय पर लिखी हुई यह एक उल्लेखनीय, पठनीय व शोध परक पुस्तक है।

प्रतिक्रिया

श्री देशना का चेतना विस्तारित करता फरवरी 2022 का अंक देखा... अत्यंत उपयोगी और सारगर्भित है ...संपादक और उनके सहयोगियों को हार्दिक साधुवाद। लेखकीय सहयोग को आतुर। सादर...

- डॉ. रामशंकर
साहित्यकार / संस्कृतिकर्मी
निदेशक
बुंदेलखंड सांस्कृतिक अकादमी
ए-128/1 दीनदयाल नगर
झाँसी, (उ.प्र.) 284003.

(धन्यवाद डॉक्टर साहब अपना स्नेहाशीष बनाए रखिए)

आचार्य ज्ञानसागर

कम्प्यूटर प्रशिक्षण केन्द्र, रघुनाथपुर

रघुनाथपुर में स्थापित सराक केन्द्र पुरुलिया रोड़ पर स्थित है, तीन मंजिला इस भवन में चैत्यालय, कम्प्यूटर प्रशिक्षण केन्द्र एवं सिलाई केन्द्र संचालित है। ब्र. भैया मनीष जी के निर्देशन में सराक बन्धु जैनधर्म का बेसिक ज्ञान प्राप्त करते हैं। श्री कमल पाटौदी (महामंत्री) विगत २४ वर्षों से निरन्तर पूर्ण समर्पण एवं निष्ठा से समस्त क्षेत्र की गतिविधियों को सुव्यवस्थित करते हैं। वर्तमान में कम्प्यूटर प्रशिक्षण केन्द्र में १६० छात्र भिन्न-२ कोर्स कर रहे हैं। सिलाई सेंटर से सैकड़ों बालिकाएँ सिलाई में प्रशिक्षण लेकर अपनी योग्यता से स्वावलम्बी बनी हैं/बन रही हैं। भविष्य में फैशन डिजाइनिंग आदि कोर्स चलाने की योजना है।

कम्प्यूटर केंद्र के छात्र व प्रशिक्षक

सिलाई केंद्र

सिलाई केंद्र ट्रष्ट द्वारा संचालित प्रमुख उपलब्धियाँ

(१) १६ औषधालय संचालित हो रहे हैं। (२) ६० धार्मिक व नैतिक पाठशालाएँ चल रही हैं। (३) बुजुर्गों एवं निराश्रित भाई-बहनों को पेंशन दी जा रही है। (४) २०१२ से रघुनाथपुर सेन्टर पर कम्प्यूटर ट्रेनिंग व सिलाई केन्द्र चल रहा है। (५) १६६४ से उपाध्याय श्री की प्रेरणा से मेरठ से "सराकसोपान" मासिक पत्रिका का प्रकाशन हो रहा है। (६) प्रतिवर्ष आचार्य ज्ञानसागर जी महाराज के चातुर्मास में १०० सराक छात्र-छात्राओं को आमंत्रित किया जाता है। (७) प्रतिवर्ष १०० से १५० सराक भाईयों को श्री सम्मेद शिखर की यात्रा करायी जाती है। (८) गरीब सराक बच्चों को पढ़ाई एवं बीमारी विशेष हेतु आर्थिक सहयोग यथावत्दिया जा रहा है।

सराक क्षेत्र में विस्तृत भूभाग में हमारे लाखों बिछुड़े श्रावक बन्धु रहते हैं। सराक 'श्रावक: शब्द का ही अपभ्रंश है। बंगाल, बिहार, उड़ीसा के दूर-दराज में ग्रामों में आज ये बदहाली एवं अभावों का जीवन जी रहे हैं। समाधिस्थ आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज की प्रेरणा से इनके उत्थान के कार्य करने के लिए भारतवर्षीय दिगम्बर जैन सराक ट्रस्ट की स्थापना की गई। सराक ट्रस्ट द्वारा अनेक गतिविधियाँ संचालित की जा रहीं हैं। समाज से अनुरोध है कि अपने भाइयों को तन, मन, धन से सहयोग देकर पुण्यार्जन करें।

गजराज गंगवाल, अध्यक्ष
मो. 9953001705

कमल कुमारपाटौदी, महामंत्री
मो. 8016031008

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन सराक ट्रस्ट
पुरुलिया रोड, रघुनाथपुर (म.प्र.)

श्रीदेशना मासिक पत्रिका

शुभ चिंतक फाउंडेशन ट्रस्ट (रजि.)

भारतीय कार्यालय : एच – 210 डैफोडिल्ज, मगरपट्टा, पुणे - 411018 (महाराष्ट्र) फोन : 8788282022

मानव सेवा, शिक्षा प्रचार, समाजोत्थान
एवं देव-शास्त्र-गुरु के प्रति समर्पित

उद्देश्य

- स्वास्थ्य सेवा शिविर निःशक्त जन हेतु कृत्रिम उपकरणों का वितरण
- योग एवं आयुर्वेद संबंधी जागरूकता शिविर
- गृहणियों एवं साधनहीनों का कंप्यूटर प्रशिक्षण
- विश्व की विभिन्न जातियाँ एवं देशों में जैनत्व के परिप्रेक्ष्य में वैज्ञानिक शोधकार्यों प्रोजेक्ट हेतु अनुदान
- प्राचीन जैन साहित्य को विभिन्न भाषाओं में अनुवाद को प्रोत्साहन
- आधुनिक परिप्रेक्ष्य में उपयोगी साहित्य का प्रकाशन
- संस्कृति संरक्षण में संलग्न महिला पुरुष एवं शिक्षा प्रसार में संलग्न गुरुकुलों का सम्मान
- रिफंडेबिल ऋण-स्वरोजगार हेतु ऋण रोजगार जैन संस्थानों में
- संपूर्ण देश में जैन संतों के विहार, विश्राम एवं कार्यरत संस्थाओं को सहयोग
- प्राचीन तीर्थ जीर्णोद्धार
- प्रतिभाशाली युवा छात्रों को प्रोत्साहन हेतु छात्रवृत्ति
- स्तरीय जर्नल्स का प्रकाशन
- नैतिक प्रशिक्षण, शाकाहार प्रसार एवं पर्यावरण संरक्षण चेतना विशेष प्रशिक्षण कार्यशालाएँ एवं सेमिनार, सम्मेलन
- अन्य समाजोपयोगी सामाजिक कार्य
- जैन धर्म पर आधारित कथानकों का वृत्तचित्र निर्माण
- कामकाजी महिलाओं एवं छात्राओं हेतु उचित स्थलों पर हॉस्टल निर्माण

आप अपनी सहयोग राशि HDFC Bank A/c no. 00901450000179 ; IFSC CODE HDFC0000486 में जमा कर सकते हैं।

स्वामी- शुभ चिन्तक फाउण्डेशन ट्रस्ट, पुणे प्रकाशक - उपश्रेणिक जैन 210 डैफोडिल्स, मगरपट्टा, पुणे 411013 (महाराष्ट्र) के लिए मुद्रक-विकास आफसेट एण्ड पब्लिशर्स 45 सैक्टर एफ औद्योगिक क्षेत्र गोविंदपुरा भोपाल से मुद्रित। सम्पादक डॉ. नीलम जैन, पुणे, मो. 89993 99481 पत्रिका में प्रकाशित लेख समाचारादि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। पत्रिका से संबंधिक न्यायालयीन वाद का क्षेत्र पुणे होगा।

मार्च, 2022 वर्ष 7, अंक 8, शुभचिंतक फाउंडेशन, पुणे

टंकण एवं मुद्रण - Jain Computers & Graphics
9309062903, 8619582141